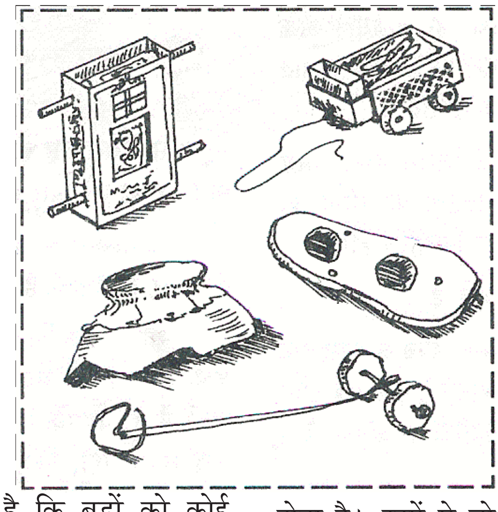
कबाड़ से जुगाड़

❑ अब्दुल गफ्फार

बच्चों का अपना कल्पना-लोक है । शिक्षा का प्रस्थान-बिन्दु शायद बच्चे को इस फन्तासी से यथार्थ की ओर मोड़ने की शुरूआत पर कहीं होगा । लेकिन बच्चे का यह दिशान्तर और यथार्थ की दिशा में प्रयाण शिक्षा की अहम् चुनौती है । बच्चे के कल्पना लोक की समृद्ध संभावनाओं और सीमाओं को समझना इस चुनौती से जूझने की पहली शर्त है । इस टिप्पणी से स्थिति का कुछ अंदाजा लगाया जा सकता है ।

जीवन में हम बहुत सारी चीजों का उपयोग करते हैं । कुछ तो उपयोग के बाद खत्म हो जाती हैं, कुछ ऐसी होती हैं जो खत्म नहीं होती । जो खत्म नहीं होती, उसे हम बेकार, कबाड़ा या अनुपयोगी का लेबल लगाकर फैंक देते हैं । मगर उन्हीं में से कुछ या कुछ के अवशेष हमारे ही बच्चे की नेकर/शर्ट की जेब या मुट्‌ठी में मिलते हैं । क्या कभी हम बड़ों ने सोचा है कि जिन्हें हम कूड़ा कह रहे हैं, उन्हें ही हमारे बच्चे हिफाजत से क्यों संभाले हैं? क्या बच्चा सोच रहा होगा कि तुम इसके उपयोग के बारे में इतना ही नहीं जानते हो ? तुममें वो दक्षता/क्षमता कहां जो मुझ में है ! और बच्चा बनाता है माचिस डिबिया की मोटर गाड़ी, अपना लॉकर जिसमें हिफाजत से रखता है अपनी मूल्यवान वस्तुएं, पत्थर, चूड़ी आदि के टुकड़े, जिन्हें बड़े होने पर किसी के द्वारा चुरा लिया जायेगा।



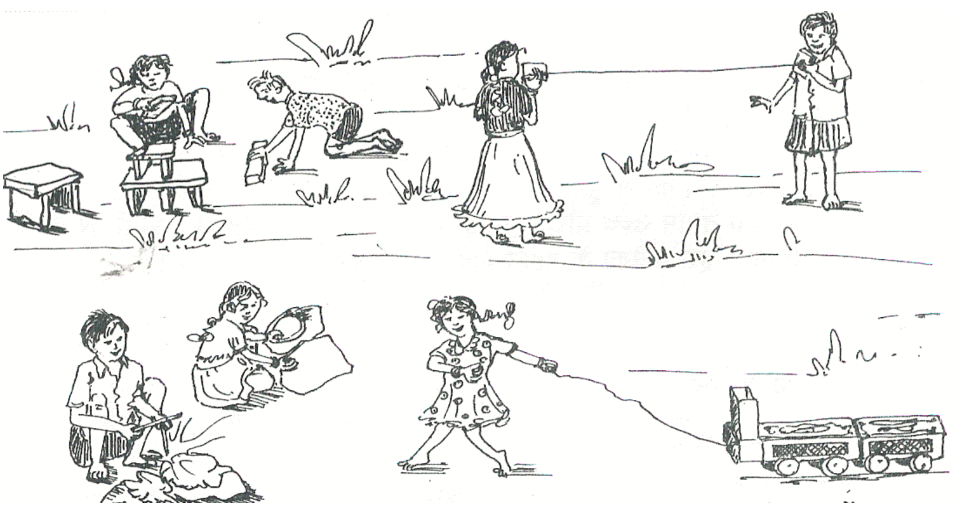
बच्चे हमेशा कुछ न कुछ करते रहते हैं । दिमाग में आई प्रत्येक कल्पना को साकार करने का अवसर तलाशते रहते हैं। जब भी अवसर मिलता है, बेकार कबाड़ा कही जाने वाली वस्तुओं का ढेर कर उससे कुछ तोड़-मोड़ जुगाड़ लगाकर सर्जन कर रहे होते हैं । इस बेकार या कबाड़े के साथ की जा रही जुगत में बच्चे बहुत कुछ सीख रहे होते हैं । इन अनुपयोगी चीजों के साथ की जा रही जुगत में एक फायदा यह भी है कि बड़ों को कोई आर्थिक नुकसान नहीं होता । जब भी बच्चे को कोई नई वस्तु दिखाई देती है, वह उसे छूना चाहता है, पकड़ना चाहता है, मोड़ना चाहता है। लगातार की गई इस कोशिश में वह जान/पहचान रहा होता है वस्तु के गुणों को । इस प्रक्रिया में बच्चे में कई प्रकार की क्षमताएं/दक्षताएं विकसित हो रही होती हैं जो हमें दिखाई नहीं देती हैं । साथ ही बच्चे को आनन्द भी आ रहा होता है ।

कबाड़ा समझकर फेंकी गई वस्तुओं में से जब बच्चा किसी चीज को छूता है तो उसके कान में ध्वनि आती है कि नहीं इसे नहीं छूना । यह गन्दी है, खराब है, अच्छे बच्चे गन्दी चीजों को नहीं छूते। कई पिताओं को मैंने देखा है, खाली सिगरेट के पाकिट को फेंक देते हैं । जब बच्चा उसे उठाता है तो उसे मना करते हैं । क्यों? आप को डर है कि गलती से आपसे कोई सिगरेट उसमें रह गई होगी जिसे बच्चा पी लेगा ? यदि नहीं तो फिर यह टोका टोकी क्यों ? लाख मना करने के बाद अवसर मिलते ही बच्चा उसे हासिल कर लेता है। और अपनी कल्पना को साकार रूप देने के प्रयत्न में लग जाता है । वह दिखा देना चाहता है कि इसमें सिगरेट ही नहीं मेरी मूल्यवान सामग्री भी रखी जा सकती हैं । फटाका बनाकर फोड़ा जा सकता है ।

इन चीजों के साथ की जा रही प्रक्रिया में बच्चे केवल कुछ बना ही नहीं रहे होते हैं बल्कि उनके साथ एक और प्रक्रिया चल रही होती है जिसमें वे काम में ली जाने वाली सामग्री के गुणों की भी पहचान कर रहे होते हैं । इससे क्या बनाया जाये ? कहां से मोड़ा जाये ? कहां से तोड़ा फोड़ा जाए ? आदि विभिन्न प्रकार के विचार बच्चा बना रहा होता है। इनमें से जो विचार अच्छा लगता है, उसी विचार को मूर्त रूप देने लगता है ।

अनुपयोगी समझ कर फेंकी वस्तुओं से बच्चे बहुत सी चीजों, खिलौनों का सृजन कर लेते हैं । इनमें से अधिकतर चीजों/खिलौनों के लिए किसी भी प्रकार के विशेष औजार की आवश्यकता नहीं होती है । आवश्यकता होती है, मात्र स्वतंत्रता पूर्वक कर्मेन्द्रियों

व ज्ञानेन्द्रियों के समुचित ताल मेल के साथ उपयोग की । जब बच्चा अपने प्रयत्नों से कुछ बना लेता है तो उसे आनन्द व उपलब्धि का अहसास तो होता ही है, साथ ही यह प्रक्रिया बच्चे को हाथों, दिमाग व स्वेच्छा से सीखने में निपुण बनाती है।



मुझे याद है जिस दिन हमारे घर में नया मटका आता था, उसी दिन से हम इन्तजार में रहते की कब मटका फूटे । जब भी वह हमारी प्यास बुझाता, तब तब हम उसके उपयोग की अवधि को कम करने की कोशिश करते । वहीं दूसरी ओर घर वाले इस अवधि को बढ़ाने की सोचते । जिस दिन मटका फूटता उस दिन घर वालों को दुःख होता । मगर हमें खुशी होती । उस बेकार कबाड़े से हमारी कल्पना जो कई दिनों से थी, मूर्त रूप लेती और बनता नगारा । उस वक्त कितना मजा आता था। इसे बजा बजाकर सुनने में जो अनुभूति होती थी, शायद यही हमारे लिए संगीत कला का पहला सबक रही होगी ।

आजकल 'कबाड़ से जुगाड़' का काफी प्रचार है । इन शब्दों से ही प्रतीत होता है कि बेकार वस्तु को कुछ जुगत करके उपयोगी बना लेना । मैंने कई जगह देखा है, लोग सिगरेट के पाकिट/माचिस की डिबिया के खोल के गिनती कार्ड बनाकर बच्चों को गिनती सिखाने में काम में लेते हैं । क्या मात्र इनसे गिनती कार्ड ही बनाये जा सकते हैं ? क्या गणित में इनसे कुछ नहीं सिखाया जा सकता ? बहुत कुछ सिखाया जा सकता है। मगर हमने तो सिर्फ यही देखा सीखा है ।

बहुत-सी संस्थाओं में बच्चों को विभिन्न प्रकार की चीजें बनाना सिखाया जाता है । बच्चे सीखते भी हैं तथा चीजों का निर्माण भी करते हैं। यह भी तथ्य है कि उनके द्वारा निर्मित चीजें बाजार में बिकने हेतु रखी जाती हैं तथा विक्रेता को बड़े उत्साह व गर्व से यह कहकर लालायित करते हैं कि ये चीजें हमारी संस्था में शिक्षा प्राप्त कर रहे बच्चों ने बनाई है । कई विद्यालयों में बच्चों से प्राथमिक स्तर पर 'समाजोपयोगी उत्पादक कार्य' करवाये जाते हैं । मेरे विचार से यह ठीक नहीं है क्योंकि जब बच्चा अपनी कृति को 'उत्पादकता' की दृष्टि से देखने लगता है तो निश्चित रूप से वस्तु के निर्माण में बच्चे को जिस सृजन के आनन्द की अनुभूति स्वाभाविक रूप से हो रही थी तथा जिस सहजता व स्वाभाविकता से जो वह गढ़ रहा था ये सब तिरोहित होने लगता है । बच्चों द्वारा निर्मित वस्तुओं को इन उद्देश्यों की प्राप्ति की दृष्टि से देखना उत्पादकता की शर्तों से पहले जरूरी है । उत्पादकता के 'लक्ष्य' को इन शर्तों के साथ समझौता करके प्राप्त करने का प्रयत्न नहीं होना चाहिये।

मैं मानता हूं कि बच्चों को ऐसे अवसर काफी मिलें कि वह बहुत सारा काम हाथों से करें । कबाड़ा कही जाने वाली वस्तुओं से नई चीजें बनायें लेकिन सवाल यह है कि यह सब करने के पीछे मान्यताएं क्या हैं ? क्या उद्देश्य हैं ? क्या बच्चा सिगरेट के पैकिट से बाजा बनाना ही सीखे ? या फिर उसमें वो दक्षताएं/क्षमताएं विकसित की जाएं कि वह अपनी कल्पना को मूर्त रूप दे, सृजनशीलता विकसित कर सके ?

मुझे लगता है कि हमारा ये मकसद हो कि बच्चे में :

- पदार्थों के गुणों को समझकर उनका मनोवांछित कार्यों में उपयोग कर पाने की क्षमता विकसित हो ।
- वस्तुओं की स्पष्ट कल्पना कर पाने की क्षमता विकसित हो ।
- कल्पित या देखी गई वस्तु के निर्माण हेतु उपयुक्त पदार्थ सामग्री का चुनाव कर पाने की क्षमता विकसित हो ।
- पदार्थ को मनोवांछित आकार-प्रकार में ढाल पाने की दक्षता विकसित हो ।
- वस्तुओं की बनावट में सुघड़ता, नफासत व सौंदर्य-बोध व उन के प्रति अनुराग विकसित हो ।◆